सावन महीने में भगवान शिव की ही अराधना क्यों ?

-प्रो० (डॉ०) भरतराज सिंह

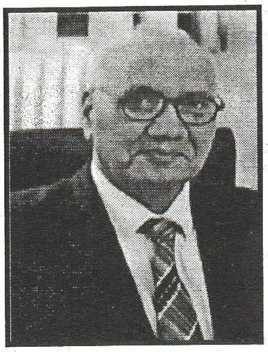

शास्त्रों में कहा गया है कि सावन का महीना भगवान शिव का महीना होता है, क्योंकि ऐसी मान्यता है कि इस महीने में भगवान विष्णु पाताल लोक में रहते हैं, इसी वजह से इस महीने में भगवान शिव ही पालनकर्ता होते हैं और वहीं भगवान विश्णु के भी कामों को देखते हैं, यानि सावन के महीने में त्रिदेवों की सारी शक्तियां भगवान शिव के पास ही होती है।

शिव को देवों का देव महादेव कहा जाता है। वेदों में इन्हें रूद्र नाम से पुकारा गया है। अब आपको कुछ ऐसे काम बताते हैं, जिन्हें सावन में करने से भगवान शिव प्रसन्न हो जाते हैं :-

➠ सावन के महीने में शिवलिंग की पूजा की जाती है लिंग सृष्टि का अर्थ चिह्न है और शिव विश्व कल्याण के देवता हैं।

➠ दक्षिण दिशा में ही बैठकर पूजन करने से मनःकामना पूर्ण होती है।

➠ शिवलिंग पूजा में भक्त को भस्म का त्रिपुण्ड लगाना चाहिए, रूद्राक्ष की माला पहननी चाहिए और बिना कटेफटे हुये बिल्वपत्र अर्पित करना चाहिए।

➠ शिवलिंग की कभी पूरी परिक्रमा नहीं करनी चाहिए। आधी परिक्रमा करना ही शुभ होता है।

आइये निदेशक स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ व वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी डॉ० भरत राज सिंह से हुयी वैज्ञानिक पहलू पर आधारित चर्चा की जानकारी से अवगत कराएँ-

डा० भरत राज सिंह का कहना है कि शिव ब्रह्माण्ड की शक्ति के दयोतक हैं। शिव लिंग काले पत्थर का ही होता है, जो वातावरण व ब्रह्माण्ड से ऊर्जा खींचता करता रहता है।

इस ऊर्जा को पूर्ण रूप से शिवलिंग में समाहित करने के लिए इसको साफ सुथरा रखने व जल, दूध आदि से अभिषेक करने की प्रथा हैं, जिससे पूजा अर्चना के समय आप को उपयुक्त ऊर्जा प्राप्त हो और प्रदूषित ऊर्जा समाप्त हो जाएं।

सावन का महीना ऐसा होता है जब बरसात से मौसम का एक माह से ज्यादा समय गुजर चुका होता है, उसके बाद मौसम में नमी व काफी सुहावनापन आ जाता है। बरसात के मौसम में शुरु के एक महीने में वातावरण में मौजूद विषाक्त गैसें धरती पर पानी के कणों के साथ आ जाती हैं और अक्सर स्त्रियों व बच्चों में त्वचा सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इन रोगों को दूर करने हेतु ही सावन में औरतों द्वारा शिवलिंग पर अभिषेक (जल, दूध, घी, शहद आदि) से किया जाता है जिससे त्वचा रोग के जर्म भी शिव लिंग में अवशेषित

होकर उनके शरीर के बैक्टीरिया भी समाप्त हो जाते हैं और औरतें निरोगी हो जाती हैं तथा शिवलिंग से अच्छी ऊर्जा ग्रहण करती हैं।

➟ सावन के महीने में शिव-पार्वती की पूजा-अर्चना से दांपत्य जीवन में प्रेम और तालमेल बढ़ता है।

➟ सावन माह में सम्पूर्ण वातावरण में पेड़-पौधों, खेतो, झाड़ियों व गार्डेन आदि में हरियाली आ जाती है, जिससे मनुष्यमात्र ही नहीं वरन जीव-जन्तुओं में भी प्रसन्नता बढ़ती है।

➟ सावन माह में औरतें समूह में झूला भी झूलती हैं और आपस में गायन कराती हैं, जिससे उनमें प्रसन्नता बढ़ती है।

वेद पुराणों में लिखित सावन की पूजा-अर्चना का विधान

अभिषेक की विधि व फल

➟ दूध से शिव जी का अभिषेक करने का परिवार में कलह, मानसिक अवसाद व अनचाहे दुःख व कष्टों आदि का निवारण होता है।

➟ वंश वृद्धि के लिए घी की धारा डालते हुए शिव सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए।

➟ इत्र की धारा डालते हुए शिव का अभिषेक करने से भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

➟ जलधारा डालते हुए शिव जी का अभिषेक करने से मानसिक शान्ति मिलती है।

➟ शहद की धारा डालते हुए अभिषेक करने से रोग-मुक्ति मिलती है। परिवार में बीमारियों का अधिक प्रकोप नहीं रहता है।

➟ गन्ने के रस की धारा डालते हुए अभिषेक करने से आर्थिक समृद्धि व परिवार में सुखद माहौल बना रहता है।

➟ शिव जी को गंगा की धारा बहुत प्रिय है। गंगा जल से अभिषेक करने पर चारों पुरूषार्थ की प्राप्ति होती है। अभिषेक करते समय महामृत्युंजय का जाप करने से फल की प्राप्ति कई गुना अधिक हो जाती है। ऐसा करने से माँ लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

➟ सरसों के तेल की धारा डालते हुये अभिषेक करने से शत्रुओं का शमन होता, रुके हुये काम बनने लगते है व मानसम्मान में वृद्धि होती है-

पुष्पपत्र अर्पण की विधि व फल

➟ विल्वपत्र चढ़ाने से जन्मान्तर के पापों व रोग से मुक्ति मिलती है।

➟ कमल पुष्प चढ़ाने से शान्ति व धन की प्राप्ति होती है।

➟ कुशा चढ़ाने से मुक्ति की प्राप्ति होती है।

➟ दूर्वा चढ़ाने से आयु में वृद्धि होती है।

➟ धतूरा अर्पित करने से पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

➟ कनेर का पुष्प चढ़ाने से परिवार में कलह व रोग से निवृत्ति मिलती हैं।

➟ शमी पत्र चढ़ाने से पापों का नाश होता, शत्रुओं व शमन व भूतप्रेत बाधा से मुक्ति मिलती है।

शिवलिंग पूजा में वर्जित

शिव पूजा के दौरान किन वस्तुओं का उपयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिएः-

➟ कुंवारी लड़कियों को शिवलिंग पर जल नहीं चढ़ाना चाहिए।

➟ शिवलिंग पर कभी केतकी के फूल अर्पित नहीं करने चाहिए क्यों ब्रह्म देव के झूठ में उनका साथ देने की वजह से शिव ने केतकी के फूलों को शाप दिया था।

➟ तुलसी पत्तों को शिवलिंग पर नहीं चढ़ना चाहिए, क्योंकि शिव द्वारा तुलसी के पति जरासंध का वध हुआ था।

➟ नारियल तो ठीक है लेकिन शिवलिंग पर नारियल के पानी से अभिषेक नहीं करना चाहिए।

➟ हल्दी का सम्बन्ध स्त्री सुन्दरता से है इसलिए शिवलिंग पर हल्दी नहीं चढ़ानी चाहिए।

➟ भगवान शिव विनाशक हैं और सिंदूर जीवन का संकेत। इस वजह से शिव पूजा में सिंदूर उपयोग नहीं होता।

निदेशक, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज,
व प्रभारी, वैदिक विज्ञान केन्द्र, लखनऊ
Mob: 9415025825; 9935025825
email: brsinghlko@yahoo.com